

५५

गिरा साह
(अपूर्व)

आशा सरवोधि
2413

ASHA ARCHIVES

स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः ॥ अर्जुनोवाच ॥ अर्जुन श्रीकृष्ण प्रतिप्रश्न भूता किया
 है ॥ हे परमेश्वर जित ॥ १ ॥ ॐ कारको माहात्मा अर्जुन प्रस्थान ॥ तेत्के सुभाक मे
 रे वांदा है ॥ त मुक्ता पाकर्णी ॥ श्रीभगवानोवाच ॥ हे अर्जुन जितु तेवहुं त भूता प्र-
 ष्ण किया है ॥ ॐ कार विस्तार कर कहता हुं ॥ आवन करिये ॥ स्वहिगिता सार है व रामः
 ॥ विष्णु महेश्वर ॥ सहि र्स्के रदा कसा हार है ॥ अग्नि वायु अर्था सहि र्स्के दे १

प्रता है ॥ गायत्रिजगद्भिः त्रिबुधुप सहित वेद है ॥ अग्नि अवरस्थान है ॥ ताहाति नवे
 द है ॥ अग्ने वेद जगुर्वेद स्याम वेद तिनु वेद का वर्ण ॥ अरु उत्पति है ॥ ॐ कार तेस्की उ
 पति है ॥ अग्ने वेद का निल वर्ण ॥ जे बुर्वेद का पितव सी ॥ स्याम वेद का सेतव रा ॥
 ॐ कार गाम अरु किसक्ति है ॥ मकार के लोक है ॥ ॐ कार अक्षर परम रूप है ॥ ए
 हि हृदय कमल विषये है ॥ पृथिवि अग्नी अग्ने वेद ब्रह्मा पुरै ॥ अकार अक्षर के साथ है ॥

गंगी

२

आकास श्रुत्यस्यामवेदय हि मकार के साथ है ॥ अरु ज्य जुर्वेद अरु रसनाति नु विष्णु
 सहि दुनु ॥ उकार के साथ है ॥ अरु रति न अक्षर का वर्गी ॥ अरु उत्पति के हो ॥ अकार
 अक्षर धित वर्गी ॥ अरु गुरा ते उत्पति है ॥ उकार सुक्त वर्गी ॥ सत्त्व गुरा ते उत्पति है ॥ मकार
 रुद्ध वर्गी तामस ते उत्पति है ॥ हे अर्जुन ॥ अकार उकार मकार तिन अक्षर मित्रिण ^{सम}
 करि ॥ उकार होता है योति सरूप है ॥ अरु ति नु र्के अवस्थान है रसीता सार के अक्षर अंग है ॥

ति न देवता है ॥ योति राये के अवस्थान है रस्के ॥ उकार को न जानौ सो ब्राह्मणाना
 हि अक्षर उकार का माहात्मा कहै हो ॥ उकार ते वे उपे ॥ उकार ते देवता उपे ॥ उकार ते
 आवर जंगम स्त्रिलोकि उत्पति भर है ॥ उकार ब्रह्मा का हृदय कमल विषय वसा है ॥
 तिके अभ्यास विषये ॥ अद्युत परमेश्वर है ॥ तत्परमेश्वर कौं प्रभा जग्य करि पु ज्य है ॥
 अवजत सामग्य कहै हो ॥ धिज्य कि अनी मन का धाम ॥ संतो विसमाधि रंदि उका

रश्मि हो मसाम गृहि ॥ आत्मा जज्ञ का कर्ता श्रुति संवात ते नो कल कडि आत्मा है ॥
 उपर किल कटि ॐ कार ध्यान कर्म धि है ॥ अधिक रे दे हि विषय श्रुती प्रगट होता है ॥
 गी ॥ जो श्रुति धो सा डि हो र तो पाप का नास करे ॥ जो श्रुति वहत हो र तो मुक्ति करे ॥ तिष्ठ
 कार का ॥ ॐ कार तिस्को र स्वर को पुजे ॥ जो जो भ जो ते क लि कि वि सु सु धार श्रै सि ॥ ॐ
 कार कि धार ॥ जंट न्पा र्ई स द ॥ होता है ॥ श्रै सि श्रुति ना सि ॥ ॐ कार को जानै ॥ सो दान्त

राम

३

का वे दान्त जानै ॥ प्रवक्ष्यन् रचिता कि वि वि कहै ॥ पुन विषये ॥ ब्रह्मा का ध्यान करै ॥ ॐ
 म विषये विष्णु का ध्यान करै ॥ ऐव क विषये महेश्वर का ध्यान करै ॥ कै सा है महेश्वर जि
 ना या ते परे है ॥ अदो र अरु मा त्रा र सह विन्द के आश्च है ॥ ॐ कार के ना द विन्द को वै वै
 शो ना के सा वे धि दे ॥ ॐ कार कि पुनि का ना द ते स्कर वायु का सो आ हा र करै ॥ ना डि क र्वा यु
 च ना वै ॥ जिह्वा के अंग करि से कै ॥ ई ॐ ॥ क धारै ॥ जो वायु अस्त हो वै तो जो गि जो ग के जु
 यति धा वै ॥ अरु ना सिका के विव कर वायु का संवार कै ॥ तिस्के आगे नि र्ग म्व य को प्रा

गिता

४

प्रहोर् ॥ उपर अरु ते लेते वायु को राका स करै ॥ अधिक रिबूह डिज्योति सकत ब्रह्मा के मी
लने का प्रमान है ॥ कैसा हरि भ्रमते परे है ॥ ताहा अत हृदय हो ता है ते सव विषये छुनि हो
ता है ॥ छुनि विषये ज्योति ॥ ज्योति विषये मन है ॥ ताहा मन लेव लिन होता है ॥ सो विष्णु
का पद है ते सपद विषये ध्यान है ॥ तस ध्यान विषये ब्रह्मा कहते है ॥ तब्रह्मा के या उने ते
प्रसन्न आनन्द को प्राप्ति होता है ॥ परमानन्द ब्रह्मा विषये ॥ अस्थिति पाईये ॥ पूर्ण ॥ कुंभ
करेवक ॥ कर हृदये ॥ अस्थिति परम हंस परमात्मा ॥ भगवान् को ॥ निर्दोष है ॥

राम
४

ते सर्वस्वर को ग्याने ते मुक्ति पाईये है ॥ जो ऐसे भगवान् को ते ससुन्यारूप नाने ॥ सो
पाप पुण्य ते निरलेप है ॥ अवसुन्या किमहि मा कहै है ॥ सुन्य हिते सम सत्य कित्यति भई ॥
सुन्य हिते परम पद है ॥ ते ससुन्य विषये ध्यान है ॥ तेश ध्यान को ब्रह्मा कहता है ॥ ता
भिकमल विषय कमल है ॥ सद्व्यंगुल ते स्कमल किना लि है ॥ सेरना लि अति को म
ल है ॥ उर्ध्व सुषकमल है ॥ ते स्कमल वरी ॥ केरा का फूल जैसा है ॥ चन्द्रमा कि जै
सिते कमल कि ज्योति है ॥ ते स्कमल के वडे दल ऐसे सा है ॥ अरु अति सुन्दर ते स्कमल विषये ॥

वस्य है ॥ ताहा आनंद मै ध्यान है ॥ सो विष्णु का परंप है ॥ अर्जुनौ वान ॥ हे श्री कृष्ण
देवर्जि उरु मुख जो हृदये विषय कमल है ॥ सो जाना विंकट है ॥ अरु आराधना वि
कटिन है ॥ हे जनार्दन ये स्कमल के पाठना कि जुग मेरे विषये अरु पनरो ॥ श्री म
गवानौ वान ॥ हे अर्जुन ॥ उरु मुख जो हृदय कमल है ॥ तिकौ ॥ ॐ कारकि आरा राम
धरा करि सिध कर्तु ॥ ते स्कमल के गर्भ विषये जाई कर्क मल को प्रकास कर्तु ॥ तौ
व्याधका नास होई ॥ सारे सरिर विषये परम सुख उपै ॥ ते स्कमल के अष्ट पत्र है ॥

ॐ विषये वि है ते डोडि के ॥ बौडि के सरिर है ॥ ते सुडोडि विषये पूर्ण प्र
रुष विष्णु है ॥ अंगुष्ठा त्रा है मंकह ते है ॥ अष्ट पत्र विषये अष्ट अंदादि देवता है ॥
सो देवता जो सरूप है ॥ ते स्कमल कि डोडि मै सूर्य है ॥ सूर्य पर्व है ॥ बंद् पश्य
गिन है ॥ अग्नि मै जोति है ॥ जोति मै सिंगासन है ॥ सो सिंगासन के सा है ॥ नाना प्र
कार के रत्नो कर्षे वता है ॥ सूर्य का जैसा प्रकास है ॥ ऐसे सिंहासन विषये देव
देव रारायेन का उत्पति है ॥ सो नारायेरा का स्वरूप वरी के नाहि ॥ अतिसुन्दरः

अथ भुजा परम फल कमल किं धारि है ॥ अथ हस्त है ॥ अथ हस्त विषये अथ
 आयु धि है ॥ कौन को धि ॥ संपन्न ॥ गदा मुसल ॥ खड्ग धनुष ॥ वान शंख ॥
 ऐसा हरि है ॥ कंबन कमल के न्या है ॥ तेसा ह फिका प्रकास है ॥ सु सु सु टिक
 कि न्या है पर सु दु है ॥ कोटि चंद्र मा कि जै सि कृति गरा धरे है ॥ कोटि चंद्र मा श्रुय का
 जैसा प्रकास है ॥ कोटि चंद्र मा जै सि सित नार है ॥ भुजा विषये बहुत है ॥ चरणी विष
 ये नु पर है ॥ कानौ विषय चंद्र मा कि घंटा है ॥ मकार कंकण डल है ॥ चारो नुग व

गिता
 ६

राम
 ६

री धारे है ॥ सत्य नुग मुक्त है ॥ त्रिता नुग रक्त है ॥ दापर नुग पित है ॥ कलि नुग वर्णा तिल
 है ॥ चारो वर्णा है ॥ सप्र निरंकार है ॥ अप्र मे व देवि मर्यादा है ॥ अति निर्मल है ॥
 जोति स्वरूप है ॥ ऐसा रूप बोत म है ॥ बहु डिकै सा है ॥ जोगि जोग श्रु वि जान कार
 सा है ॥ कसे वसु का सा धना कर्त्ता नाहि है ॥ तादृ बिंदु श्रु कि कला ते अति है ॥ जो
 अये पुरुषोत्तम कौ जानै ॥ सो वेदांत का वेदान्ता है ॥ प्रजुत उवाच ॥ हे श्री कृष्ण
 देव जिः प्रदृष्ट वसु विषये भावना उच्यैति नाहि है ॥ अहं दृष्ट मात विन स्यति अ

ॐ सा

सिजाति है ॥ अक्षर जो है प्रमा सुवर्ण चिह्न है ॥ प्रभु जि जो गे स्वर्ग के स्का ध्यान कर्ते
है ॥ श्री भगवान् नो वाच ॥ हे अर्जुन जो गे स्वर्ग का प्रभु तिसु तो ॥ जाउं कि कै ॥ सिसमा
वि है ॥ और प्रमा अंतर्पुरी है ॥ प्रभु आपने विषये पुरी जानिये है ॥ उनकी यहिस
माधि है ॥ प्रमा कौनिरंतर पुरी जानै है ॥ हृदये कर्म त कि जो विषये सुदुह्य भग
वान् है ॥ यह मंत्र कौ उच्चार करै सो मुक्त होई है ॥ हे अर्जुन आसन आसन वै से ते ॥ सहजा
सो वृते ॥ चले ते ॥ सम सम कामो विषये तो ॥ जोग गुरुति होई है ॥ अक्षर सिता सार

राम

सास्त्र का श्री भगवान् महेश कहते है ॥ हे अर्जुन ॥ यह सिता सार है ॥ विषय कौ
अधकार कौ ना सकति है ॥ दृष्ट किन्तु ईदर्सन देखावै है ॥ अपनि विषये परम आ
त्मा का दर्शन देखावै है ॥ यह सिता सार विषये ज्ञान है वेद आसास्त्रो का विहि जाहि है ॥
ग्राम वेद का अर्थ प्रकट करि देता है ॥ सुभ्यते सुन्य है ॥ जो सुना संसार का भ्रम न
ना सकती है जो कोई यह विष्णु का पद सुख पाठ करै ॥ अर्थ वा को हि भवन करै ॥
सो परम पद पावे ॥ अष्टादश पुराणान वया कर्ता चार वेद ये हि विष्णु स देव मर्थ ॥

ॐ सा
८

मधिकरमाहा मत्तककाप्रमाहाभारतकोमधिकरसप्रसये॥ सप्तलोकभगवदिताका
अभगवदिताकोमधिकर॥ श्रीकृष्णदेवजिः सारगिताकाटितेस्सारगिताका॥ अर्जुन
केमुखआगरविंदुविषयेहोमकिसेः पाषकानासकातीहै॥ दितदिनऐकापाठकरै॥
अर्थवाअव्रनकरै॥ गंगजिकाछानकापुन्याहै॥ जोयकहिवारसारगिताः अर्द्धजल
वियछानकरैपढेसोसंसारतेमुक्तहोई॥ स्यामंत्रसास्त्रउत्तिमहै॥ जस्कीदातिहैआ राम
पुर्वालाकिदातिहो॥ नारायनमहेससकतरमईसास्त्रमईगितासर्वधर्ममईदया॥ ८

वक्तव्याकहुं॥ इतिश्रीभगवद्गीताप्रसुपतिसुपनिषत्सुब्रह्माविद्यायायो
योगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीगितासारसास्त्रसम्युक्तं प्रभुप्रसाके॥ १८०३
मासे२६वारैरनक्षेत्रैः तिथौघटि१२ इतिश्रीगितानालिखितेनुभुग्रामेकिंवा
नक्षिसंवादे रुद्रवाहादुकीकिनिषितं प्रसुपोवा प्रसुवाप्रमदोषोतदियेते
रामरामराहुरिहरिबीबरामरामभजेः सत्येजुगेवाइसवर्षनित्रितायासप्र
मेवव॥ छापरेयं ववर्षीनिकलिजुगेभक्तिमेवव॥ १८०३ रामरामराहरहराम

जोको ईश्वरका एक भूतोक आधा भूतोक ॥ एक चररा आधा चररा पाठ करै ॥ नारायण
 का ध्यान करै ॥ सो संसार ते प्रबंध कुपते मुक्ति होई ॥ श्री कृष्ण भगवां का वचन है ॥ वचनो ही
 ते गिता सार भय भूतो उत्पति भया है ॥ अमृत रूप है ॥ रेत किरेत मनु पुरुषोत्तम पतिः स्कोत
 उति कि प्रातः पाप के ॥ अग्नान के विरेचन करी हार है ॥ वारंवार भक्ति भात सध गिता
 गिता सार सार का पाठ अबन कि ज्ये ॥ अहंसा से का विस्तार हन पति कि ज्ये ॥ कमल नयन जो है ॥
 श्री कृष्ण भगवां तिके कमल मुख ते निके है ॥ श्री मुख वाक्य है ॥ गंगा गिता गायत्रि गुरु
 गोविंद गहि पंचो ग सो पुनरपि जन्म कौन पावै जो को ईश्वर गिता सार का यथा विधि
 सों अभ्यास करी जानै सो निवृत्त नर मानै करै स्वभि विष्णु का पद माहा जाई प्राप्त होई रंसे

गंगा गिता

२२

आशा चरक

ASHA ARCHIV

2443